उपसंहार

नासिरा शर्मा हिन्दी महिला कथा साहित्य की अन्यतम कथा शिल्पी हैं। इनका कथा साहित्य हिन्दी साहित्य के मुख्यधारा के लेखकों से किसी भी मायने में उन्नीस नहीं है। महिला कथाकार होते हुए भी इन्होंने सिर्फ आधी आबादी को केन्द्र में रखकर अपनी लेखनी नहीं चलायी बल्कि समाज में घट रहे उन तमाम मुद्दों को अपनी सर्जना का माध्यम बनाया जो मानवता के हित में हों । नासिरा शर्मा ने लगभग आधा-दर्जन उपन्यास लिखे जिनकी विषयवस्तु एकांगी न होकर बहुआयामी है। इनके कुछ उपन्यास पाकिस्तान विभाजन से उपजे पारिवारिक विद्रोह पर आधारित हैं तो कुछ वैश्विक स्तर पर पानी की समस्या से उठ खड़े संकट की परिचर्चा पर आधारित हैं। वहीं 'सात नदियाँ एक समुन्दर', 'शाल्मली' और 'ठीकरे की मंगनी' बिशुद्ध स्त्री संवेदना परक उपन्यास हैं। लेखिका का नारी-मन, स्त्री पात्रों के संदर्भ में विशेषकर कहानियों में ऊभर कर आता है। इनकी लगभग सभी कहानियों में कमोवेश स्त्री संवेदना का चित्र अंकित हुआ है ।

“नासिरा शर्मा का कथा साहित्य अनुभव के सागर से निकलकर कथा जगत में अवतरित वे एहसास हैं जो स्त्रीवाद और स्त्री-विमर्श को समझने की दिशा में महत्वपूर्ण अध्याय है। उन्होनें सौ से अधिक कहानियाँ, सात उपन्यास, निबंध, रिपोर्ताज आदि लिखा है। जो भारतीय तथा एशियाई व अरब मुस्लिम देशों के समाज के विभिन्न तबक्कों, मध्यम वर्ग, अभिजात्य वर्ग और निम्न मध्य वर्ग की सामाजिक सोच एवं अलग-अलग शैक्षणिक- आर्थिक स्तर के समाज में स्त्रियों की दशा, दिशा, सोच तथा उनके बारे में पुरुष की सोच का खुलासा करती है।" (1) नासिरा शर्मा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे नारी-विमर्श के लिए सोच-समझकर लेखन कार्य नहीं किया वरन, प्राकृतिक रूप से उन्होंने अपनी लेखनी सामाजिक कुरीतियों एवं समस्याओं पर चलायी जो जहाँ जैसी समस्या सामने आती गई उसका

निदान उद्देश्यपरक कथासाहित्य को जन्म देता गया। उसी में अधिकतर कहानियाँ और तीन-चार उपन्यास नारी संवेदना से भी लिपटे, सने सर्जित हो गये। विवेच्य कथाकार के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना के विविध आयामों को प्रस्तुत एवं विश्लेषित करना ही इस शोध का प्रमुख विषय रहा है। अत: इसके अंतर्गत प्रमुख रूप से उन्हीं कहानियों और उपन्यासों का विश्लेषण या अनुसंधान हुआ है जिनमे स्त्री-संवेदना की प्रधानता है। अन्य सभी उपन्यासों और कहानियों का परिचयात्मक विवरण प्रथम अध्याय में उल्लेखित है।

प्रस्तुत शोध का शीर्षक है- 'नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री संवेदना के विविध आयाम' अतः संवेदना शब्द की उपादेयता एवं अर्थघटन अति आवश्यक है। साहित्य जैसी सुकुमार वस्तु का विनिर्माण ही संवेदना के बिना संभव नहीं है। संवेदना ही वह आन्तरिक भाव है जो व्यक्ति को सुख-दुःखादि का बोध 'कराती है। सर्वप्रथम प्राणीयों के सामने समस्या या साधन प्रस्तुत होता है. उसके पश्चात् वह इन्द्रीय जनित अनुभव द्वारा दुःख अथवा 'प्रसन्नता को अनुभूति करता है, अनुभूतिजन्य विचार जब अभिव्यक्ति पाते हैं तब जाकर संवेदनात्मक साहित्य का सृजन होता है । हिन्दी साहित्य में ऐसी ही अनेक समस्याओं एवं संकटों से संघर्ष करती हुई महिलाओं की कथा-व्यथा वर्णित है, जिसे हम स्त्री-विमर्श के नाम से जानते है। इसी स्त्री-विमर्श की महिला कथाकारों में एक सुप्रसिद्ध नाम नासिरा शर्मा है जिनके कथा साहित्य पर प्रस्तुत शोध संवेदनात्मक रूप से आधारित है।

स्वातंत्रोत्तर महिला कथाकारों में नासिरा शर्मा इस मायने में सबसे अलग व्यक्तित्व रखती हैं कि उनकी सर्जना के माध्यम से नारी-विमर्श की सीमा सरहद के उस पार तक फैली हुई है। लेखिका का यह मानना है कि औरत और मर्द सांवेदिक धरातल पर अलग नहीं हैं, मात्र सोच, शिक्षा, स्वभाव और समझ की सीमा को यदि

पुरुष या स्त्री बड़ा बना ले तो समाज में व्याप्त असमानता और अलगाव समाप्त हो जायेगा।

पुरुष प्रधान समाज पीढ़ियों से सत्ता का आदी हो गया है वह औरत से प्रेम तो करता है किन्तु उनको सम्पत्ति की तरह अपने संरक्षण में रखना चाहता है । भारतीय पुरुष प्रधान समाज की सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि यहाँ जब भी कोई मामला औरत से जुड़ा हुआ होता है तो सबसे पहले पुरुष की मर्यादा पर आँच आती है। लेखिका ने अपने तमाम कहानियों एवं उपन्यासों में इस बात को चित्रित किया है। पुरुष; औरत के द्वारा प्राप्त सुविधाएं एवं सम्पत्ति का उपभोग करना चाहता है किन्तु औरत को स्वतंत्र नही छोड़ना चाहता। वह इस बात से हमेशा, सशंकित रहता है कि कहीं उसकी पकड़ ढीली तो नहीं पड़ रही उपरोक्त तथ्य का बड़ा ही यथार्थ उदाहरण नासिरा शर्मा का उपन्यास 'शाल्मली' है। शाल्मली उपन्यास का नायक नरेश 'शाल्मली के द्वारा प्राप्त समस्त सरकारी सुविधाओं का लाभ उठाना चाहता है परंतु औरत को औरत की मर्यादा में रहने की हिदायत हमेशा शाल्मली को देता रहता है। स्त्री, पुरुष से कमतर किस मायने में है ? मस्तिष्क, चेतना और शक्ति में नारी आज पुरुषों के साथ कंधों से कंधा मिलाकर चल रही है फिर 'नरेश' जैसी मानसिकता क्यों पनप रही है ? इसका खुला मंच लेखिका पाठकों के सामने अपने कथा साहित्य के माध्यम से पेश करती है। अपनी सर्जना को विमर्श के बाजार में नासिरा नहीं उतारती बल्कि वे संवेदना को महत्व देते हुए कहती है कि - "आज के इस दौर में मेरी अपनी भी जिम्मेदारी है अपने लेखन, समय और उसके वर्ग के प्रति जो पीड़ित है, और इसलिए भी की मैं उसी की एक कड़ी हूँ और यह मेरा कर्तव्य भी है

इसलिए मैं उन सारे कानूनों को जो इन्सान है, विशेषकर औरत के फायदे में आते हैं लब बैंक करती हूँ और अपनी आवाज में पाठकों की आवाज की गूँज सुनने में आशा करती हूँ, जो मेरी तरह इन विचारों से सहमति रखते हैं।"[2]

लेखिका का मानना है कि व्यक्ति की सोच बदलने में शताब्दियां बीत जाती हैं। इसलिए पुरुष प्रधान समाज का औरत के प्रति जो सोच है वह बिल्कुल नहीं बदला जा सकता, परन्तु समय के साथ मनुष्य के स्वभाव में औरत के प्रति तब्दीली जरूर आएगी 'घर, परिवार व्यक्ति, समाज, देश इन सभी की समस्याओं के बारे में नासिरा शर्मा ने बड़ी बारीकी से सोचा है, विचार किया है। लेखिका इन्हीं समस्याओं को केन्द्र में रखकर अपने कथा साहित्य का सर्जन किया है। समय' स्थान, और परिस्थिति के साथ-साथ व्यक्ति की सोच में भी परिवर्तन आ रहा है। यह परिवर्तन पुरुष की अपेक्षा 'स्त्री, में अधिक परिलक्षित हो रहा है। पुरुष पहले भी स्वतंत्र था, आज भी आजाद है। नारी पहले भी पराधीन थी और आज भी पूरी तरह स्वतंत्र नहीं है। कहीं अधिकार और सत्ता की सताई हुई है तो कहीं प्रेम के नाम पर अथवा रिश्तों की मर्यादा के नाम पर छली हुई।

नासिरा शर्मा स्त्री पर नारीवादी आन्दोलन की सीमाओं से बाहर रहकर बृहत्तर राजनीतिक- सामाजिक और संवेदनात्मक परिप्रेक्ष्य में विचार करती हैं। एक कुशल पत्रकार होने के कारण इन्होंने विभिन्न देशों और सम्प्रदाओं की औरतों की संवेदना, संघर्ष और शिकन को नजदीकी से देखा है।

नासिरा शर्मा का मानना है कि स्त्री को अपने स्त्रीत्व की रक्षा स्वयं ही करनी पड़ेगी। पिछले पाँच हजार वर्षों में पुरुष का व्यक्तित्व उतना नहीं बदला है जितना औरत का। यह परिवर्तन ही यथार्थत: सामाजिक चेतना को प्रेरित करता है। ज्ञातव्य है कि हमारी पुरानी पौराणिक, ऐतिहासिक स्त्रियों की महत्वाकांक्षाएँ मुख्यतः पति और पुत्र, परिवार और व्यक्तिगत आकांक्षाओं पर केन्द्रीत थी। आधुनिक युग की सचेत और जागरुक औरत परिवार से जुड़कर लोकहित हेतु कुछ रचनात्मक कार्य भी करना चाहती है। यदि ही किसी स्त्री को जीवनसाथी उसकी इच्छा के विरुध्ध तलाक लेना चाहता हो तो, उसमें इतना आत्मविश्वास होना चाहिए कि घर टूटने को वह व्यक्तित्व

टूटने के रुप में लेने से बच सके। दहेज और बलात्कार के प्रसंग में समाज की मानसिकता बदलने आवश्यकता है. समाज कि ये हो दोनों चीजें बड़ी ही संवेदनशील हैं। उपरोक्त परिस्थियों के खिलाफ लड़ने तथा संघर्ष करने के लिए औरत को पुरुष के सहयोग की अति आवश्यकता है। इसीलिए नासिरा शर्मा औरत और मर्द को एक चने की दो दाले मानती हैं, कारण कि वे पुरुष के खिलाफ नहीं हैं। वे समस्या और बेढंग सामाजिक स्ट्रैक्चर के खिलाफ हैं।

नासिरा शर्मा के कथा साहित्य का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि प्रतिहिंसा अथवा बदला लेने की नियति से कोई निर्माण नही हो सकता। वे पितृसत्ता का विरोध करती हैं, पुरुष का नहीं। क्योंकि पुरुष का विरोध अर्थात प्रकृति का विरोध और प्रकृति के साथ क्रूरता अर्थात सर्जनशीलता की अवमानना है, चाहे उसके दायरे में पुरुष आए या स्त्री सत्ता किसी की आवश्यक नही है न मर्द की और नही औरत की हमारे सामाजिक ढाँचे की खामियों के कारण आज सत्ता पुरुष के हाथ में है जिसके कारण वह सबल है और नारी मुक्ति की आकांक्षी | मेरी समझ से सही नारी- "मुक्ति और स्वतंत्रता, समाज की सोच और नारी स्थिति बदलने में है। बाहर निकलो या घर में रहो हर स्थान पर पुरुष से स्त्री और स्त्री से पुरुष टकराएगा । इसलिए लेखिका व्यक्त नहीं व्यक्ति के कुत्सित विचार और व्यवस्था का विरोध करती है।

स्वातंत्रोत्तर हिन्दी कथा साहित्य की महिला कथाकार पुरुषों के मुकाबले और पुरुषों की मौजूदगी के बावजूद हिन्दी साहित्य में अपनी रचनाशीलता का लोहा मनवाती रही हैं। उनके संवेदन की गहनता, उनके अनुभव का सीमित किन्तु सार्थक रचना संसार उनकी ममतामयी और मार्मिक जीवन दृष्टि, उनकी अभिव्यक्ति कौशल की विशिष्टता और नारी मुक्ति की मांग ने पाठक को संवेदनात्मक रूप से अपनी तरफ आकर्षित किया; जिसका परिणाम यह हुआ की स्त्री विमर्श परक लेखन की हिन्दी साहित्य में बाढ़ सी आ गई परिणामतः नारी की दबी-कुचली संवेदनाएं साहित्य

में अभिव्यक्ति पाने लगी। जिसके कारण लोगों की सोच में स्त्री के प्रति संवेदनशीलता गहरी हुई ।

संवेदनात्मक साहित्य की सर्जना ने पुरुष लेखन के सामने बड़ी चुनौती खड़ी कर दी। इस चुनौती का परिणाम यह हुआ कि नारीवादी विचारधारा और नारी-विमर्शकार पूरी शक्ति से नारी की स्वतंत्रता और उसकी मुक्ति के प्रश्न को केन्द्र में रखकर लेखन करने लगे और साहित्य में सहानुभूति बनाम स्वानुभूति की बहस खड़ी हो गई। परिणामतः स्वातंत्रोत्तर महिला लेखिकाओं की सर्जनात्मक रचना शैली ने आज के हिन्दी साहित्य की दशा और दिशा को बदल दिया। अब औरत की रचनाधर्मिता पर गृहस्थी का रोना रोने का आरोप नहीं लगता वरन उसके लेखन पर गहरी आलोचना, समालोचना होती है। यही कारण है कि स्त्री-विमर्श की समर्थक लेखिकाएं अब नारी को देहमात्र अथवा उपभोग की वस्तु समझने की अवधारणा का विरोध करती हैं। बंगला-देश की स्त्रीत्ववादी लेखिका 'तसलीमा नसरीन' लिखती है- "दुनियाँ में सब कुछ भोग्य सामग्री है और दुनिया का सर्वोत्तम सामग्री है स्त्री । विनिमय वस्तु के बतौर मूल्यवान दास के रूप में कीमती सामग्री के रूप में समाज में नारी का स्थान है। "[3]

नासिरा शर्मा स्त्री संवेदना परक लेखन की सशक्त हस्ताक्षर है -यह कहना गलत न होगा, क्योंकि उन्होंने ही नारी संवेदना और शिकन को शहरी वातावरण से प्रसारित करते हुए गाँव की सीधी-सादी महिलाओं की संवेदना को साहित्य में स्थान दिलाने की सफल कोशिश की हैं। इन्होंने स्त्री-विमर्श के तहत पितृसत्तात्मक मूल्यों, दोहरे नैतिक मापदण्डों, यौन कुण्ठा, लिंग भेद की अवैचारिक राजनीतिक व सामाजिक मान्यताओ, धारणाओं एवं अंतर्विरोधों की नीव हिला दी।

शताब्दियों से जिस बर्बर व्यवस्था ने नारियों को कदम-दर-कदम रौंदने और उनकी संवेदनाओं को तोड़ने की कोशिश की है, उसके अस्तित्व एवं अस्मिता को

नकारा है, उसकी गरिमा और स्वाभिमान का गला घोंटा है, उस बर्बर व्यवस्था के खिलाफ सशक्त पात्रों की संरचना कर घमासान युद्ध छेड़ा है। अब तक पितृसतात्मक समाज ने स्त्री को मातृत्व, सतीत्व एवं नारीत्व का महिमा-मंडन कर जिस माया-जाल में फँसाकर चहारदिवारी में बंद कर रखा था, स्त्री संवेदना परक लेखन ने उसी मोहजाल को खण्डित कर दिया । उनकी स्त्री पात्र आचारण की पैतृक मर्यादाओं और खोखली परंपराओं की सीमा का अतिक्रमण करती नजर आती है। उनकी स्त्रीयाँ तन-मन से स्वतंत्र नारी अस्मिता एवं निर्णय की मांग करती हैं। नासिरा शर्मा ने जिस साहसिकता एवं निर्भीकता से । 'ठीकरे की मंगनी' 'शाल्मली' और 'बहिस्ते जहरा ' उपन्यास लिखा है, वैसा शायद ही कोई महिला कथाकार लिख पाया हो । उपरोक्त उपन्यास नारी के स्वतंत्र एवं निर्भीक निर्णयों के ऐसे दस्तावेज हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी आने वाली स्त्री संतति को यह पाठ 'पढ़ाती रहेगी कि पूरे ईमानदारी से जो भी महिला साहसिक और स्वतंत्र निर्णय लेने हेतु अविलंब प्रस्तुत रहेगी वही सुरक्षित एवं इतिहास के पन्नों पर स्वर्ण अक्षरों मे अंकित होगी । अन्यथा भेड़, बकरियों सदृश जीवन जीने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

लेखिका के व्यक्तित्व और कृतित्व उनकी रचना शैली एवं बहुज्ञता पर प्रकाश डालते हुए अमरीश सिन्हा लिखते हैं - "समकालीन कथा साहित्य की दुनिया में नासिरा शर्मा की सबसे बड़ी विशेषता विभिन्न अंचलों की भाषा-शैली है। ये अंचल इलाहाबाद, ब्रज-आगरा-कानपुर का, सीमावर्ती प्रदेश, अवध प्रांत और राजस्थान आदि हैं। उन्होंने हिन्दू व मुस्लिम समुदायों के परिवारों में बोली जाने वाली बोलियों और शब्दों का बड़ा ही प्रवाह रूप से प्रयोग किया है। जनवाणी की अधिकारिणी व मखमल जैसी छहलनेवाली साथ ही फर्राटेदार भाषा की धनी नासिरा शर्मा 'स्त्री विमर्श' के ऐसे आयाम प्रस्तुत करती है जो अब तक हाशिए पर थे। नासिरा शर्मा के पास भाषा वैभव

है । वे हिन्दी, उर्दू के अलावा फारसी, पश्तो, अंग्रेजी की अच्छी जानकार है । इसलिए उनका नजरिया, अध्ययन एवं अनुभव फलक काफी विस्तृत है।"[4]

स्वातंत्रोत्तर हिन्दी महिला कथा साहित्य से लेकर समकालीन कथा साहित्य में नासिरा शर्मा एक विवादास्पद एवं विरोधाभाषी व्यक्तित्व और रचनाशीलता की रचनाकार रही हैं किन्तु समस्त महिला कथाकारों में उनका स्थान एवं व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक और महत्वपूर्ण है। इन्होंने अपनी रचनाधर्मिता की बेबाक शैली द्वारा, हिन्दी साहित्य में अपना विशेष पहचान बनाया है। स्त्री संवेदना के संदर्भ में प्रायः कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, मैत्रेयी पुष्पा मृणाल पाण्डे, ममता कालिया, प्रभा खेतान राजी सेठ, मृदुला गर्ग आदि की विशेष चर्चा की जाती है। पर नासिरा शर्मा का साहित्यिक कैनवास उपर्युक्त स्त्री रचनाकारों की तुलना में अधिक विस्तृत एवं सोदेश्यपूर्ण है। कारण कि उनके कथा साहित्य में हिन्दू, मुस्लिम कम्यूनिटी, ईरान, ईराक एवं पाकिस्तान में रह रही नारियों की मानसिक स्थिति, दर्द, छटपटाहट आदि नारी संवेदनापरक भावों एवं चेतनाओं को अभिव्यक्ति मिली है।

विभिन्न जाति, समुदाय, वर्ण एवं वर्ग की स्त्रियों की संघर्षशील जीवन शैली उनके कथा लेखन का प्रमुख केन्द्र है। अन्य महिला कथाकारों का कथा साहित्य ज्यादातर हिन्दू समाज की नारियों उनके दैनांदिक समस्याओं एवं संघर्षो को रूपायित करने में संलग्न जान पड़ते है।

वस्तुतः नासिरा शर्मा वर्तमान समय की सबसे ख्यातिलब्ध रचनाकार हैं। उन्होंने सरहद पार तक के नारी-जाति से सांवेदिक साक्षात्कार किया है। उन्होंने उसकी संवेदना-शिकन, दुःख-दर्द को केवल देखा ही नहीं बल्कि महसूस भी किया है, और अपनी सर्जना में अभिव्यक्ति प्रदान कर समूची स्त्री-जाति के उत्थान हेतु आवाज उठाया है। उनकी निष्ठा संवेदनाओं के साथ है जिसमें बौद्धिक एवं तार्किक, विचारों का पुट परिलक्षित होता है। लेखिका के कथा साहित्य में मानव को मानव द्वारा दी गई

पीड़ा की बर्बरता के खिलाफ स्वर बुलंद करने का चित्र सर्वत्र दिखाई पड़ता है। जहाँ प्रताड़ना उत्पीड़न एवं शोषण है, वहाँ नासिरा शर्मा को हम सावधान एवं प्रश्नवाचक मुद्रा में खड़ी पाएंगें। "कहना न होगा कि नासिरा शर्मा का कथा साहित्य मानव मूल्यों, विशेषकर नारी मन को उकेरता है। जिसमें स्त्री-पुरुष संबंधों, पुरुष प्रधान समाज में स्त्री की दशा-दुर्दशा एवं स्त्री विमर्श का ईमानदारी पूर्वक चित्रण है। कथा साहित्य में विद्रोह की एक परंपरा भी विकसित होती है, जिसका उद्देश्य है-एक व्यवस्था की स्थापना जो पूर्ण रूप से पुरुष प्रधान न हो, स्त्री पुरुष के समान भागीदारी हो, किसी का किसी पर वर्चस्व न हो, आजादी की सुबह हो और इस सुबह की लालिमा से ओत-प्रोत हो हमारा समाज तभी प्रकृति प्रदक्त इन्सानियत की खुशबू से हमारा जगत सुवासित हो सकेगा । इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु नासिरा जी का कथा साहित्य महिलाओं मे नई शक्ति, ललक और हिम्मत भरने की क्षमता भी रखता है।

प्रस्तुत शोध के प्रथम अध्याय में लेखिका के व्यक्तित्व की बहुज्ञता एवं कृतित्व की सीमा का केवल परिचयात्मक विवरण जरूर है किन्तु लेखिका का निजी व्यक्तित्व उसकी संवेदनात्मक अवस्था एवं जीवन चक्र की महत्वपूर्ण घटनाएं स्पष्ट अंकित हैं, जिसका प्रभाव रचना कर्ता के साहित्य पर भी पड़ता है। नासिरा शर्मा स्वयं इस प्रभाव के प्रवाह में कभी डूबती तो कभी तेरती नजर आती हैं। क्योंकि संवेदनशीलता एक साहित्यकार के लिए सबसे आवश्यक भाव हैं। बस महत्वपूर्ण यह है कि साहित्यकार अपनी इस विशेषता से भली-भाँति परिचित होना चाहिए। इसके लिए संवेदना का अर्थ, परिभाषा एवं क्षेत्र विस्तार का ज्ञान एवं अनुभव होना आवश्यक है। नासिरा शर्मा की बहुज्ञता इस बात का प्रमाण है कि वे संवेदनात्मक रूप से सबल लेखिका हैं। इसका उदाहरण उनकी कहानियों एवं उपन्यासों में वर्णित नारी पात्रों के चरित्र हैं।

स्वातंत्रोत्तर महिला कथाकारों ने हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श का जो चित्र खींचा था वह नारी के हक एवं पितृसत्ता के विरोध से उपजी पुरुष प्रतिशोध का साहित्य जान पड़ता है; जिसमें पुरुष के समस्त क्रिया-कलापों को एक शक के दायरे में रखकर देखा जाता रहा है। प्रतिशोध की भावना से भावित नारी, उत्कर्ष के स्थान पर पतन के गहरे समन्दर में डूबती जा रही थी जिससे मानव मूल्यों का क्षरण एवं आधी आबादी की अस्मिता, स्त्रीत्व समाप्त होने के कागार पर था उसी समय कुछ महिला कथाकारों (मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, क्षमा शर्मा) का उदय संवेदनात्मक साहित्य सृजन के रूप में होता है। स्त्री विमर्श की एकांगी विचारधारा से पितृसत्ता का विरोध करने वाला साहित्य स्वतंत्रता के बाद नारी संवेदना से जुड़कर मूल्यों एवं अस्मिताओं पर बल देने लगा। जिसकी सबसे बड़ी कड़ी नासिरा शर्मा एवं उनका कथा साहित्य है।

समग्र रूप से कहना न होगा की सम्पूर्ण व्यवस्था में जिस आमूल रूप से स्त्री संवेदना के पुर्न र्मूल्यांकन और विश्लेषण की जरूरत है । इस निर्णय के अधिकार को पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने अभी तक अपने हाथ में रखा है, ऐसी दशा में स्त्री-जाति को बेचैनी, छटपटाहट, चहारदिवारी से बाहर निकलने की अकुलाहट 'स्वाभाविक है और प्रकृति प्रदक्त भी क्योंकि ईश्वर ने औरत मर्द को समान बनाया है केवल शक्लें अलग दी है किन्तु इस मजाजी दुनियाँ के तथाकथित खुदाओं ने प्रकृति; प्रदक्त आजादी को अपनी निजी सम्पत्ति बना रखा है। पुरुष प्रधान समाज की इसग्रह अमानवीय एवं गैरकानूनी शक्ति का विरोध हिन्दी साहित्य की चंद महिला कथाकारों ने किया; जिनमें सबसे बड़ा नाम नासिरा शर्मा का है।

अंत में हम कह सकते हैं कि नासिरा शर्मा नारी जीवन से जुड़ी उन तमाम व्यवस्थाओं एवं पारंपरिक रूढ़िवादी मानसिकताओं के खिलाफ हैं, जो औरत को संवेदनात्मक रूप से तोड़ता है। उनकी निर्णय की स्वतंत्रता एवं अस्मिता के मूल्यों को

जहाँ पर भी कम आंका जाता है वहीं से नारी-विमर्श प्रारंभ होता है। लेखिका के सम्पूर्ण कथा साहित्य की स्त्री-पात्र सहज, सचेत, स्वाभिमानी एवं शिक्षित हैं। वे आधुनिकता से सजी-सँवरी एवं परंपरा से संस्कारित हैं किन्तु नारी अस्मिता एवं स्त्रीत्व को जहाँ असुरक्षित देखती हैं वहां वे विद्रोहिणी रूप भी अख्तियार करती है।

चूँकि नासिरा शर्मा एक वर्ग, जाति अथवा सम्प्रदाय की लेखिका नहीं है इसलिए उनके कथा साहित्य को नारी-विमर्श का जामा पहनाना तर्कसंगत नहीं जान पड़ता बरन वे नारी की अस्मिता एवं स्वतंत्रता का सर्वांगीण विकास चाहती हैं अत: उन्हें नारी संवेदना एवं मानवता के मूल्यों की लेखिका कहना सर्वथा उचित होगा। इनकी स्त्री पात्र नारी जाति के 'उत्थान में ही अपना उत्थान मानती हैं इसलिए वे पुरुष से छुटकारा नहीं पुरुष का समर्पणा और साथ चाहती हैं।

साथ भी इस प्रकार का कि उसमें सहयोग का भाव हो। रिश्तों को जोड़े रहना, संबंध विच्छेद न करना एवं नारी जीवन मे शन्ति, संतोष सौहार्द स्थापित करना लेखिका की रचना धर्मिता की सबसे बड़ी विशेषता है किन्तु उपरोक्त तथ्यों को नारी की अस्मिता और स्वाभिमान का सौदा करके प्राप्त करना संभव नही है। इसके लिए औरत और मर्द के मध्य आपसी समझ एवं सम्मान का भाव होना अति आवश्यक है। लेखिका के कथा साहित्य में इस बात पर भी जोर दिया गया है; कि कोई किसी के सीमा का अतिक्रमण न करे क्योंकि जहाँ पर भी सीमा का अतिक्रमण हुआ है वहाँ रिश्तों का कसाव ढ़ीला एवं संबंध विच्छेद की संभावन प्रबल हुई है ।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि नासिरा शर्मा नारी संवेदना के प्रति सहज एवं पुरुष के साथ औरत को देखने के प्रति संवेदनशील लेखिका हैं। उनका कथा साहित्य आने वाली पीढ़ी को श्रेष्ठ साहित्य एवं बड़ा उदेश्य प्रदान करेगा ।

संदर्भ सूची-

1. डॉ. अमरीश सिन्हा, बोगदे से बाहर, पृष्ठ-98
2. डॉ.एम. फिरोज, वाङ्मय, ललित शुक्ल-संवेदना और पीड़ा की चित्रकार मुक्तिकामी रचनाकार: नासिरा शर्मा, पृष्ठ- 108
3. तसलीमा नसरीन, औरत के हक में, पृष्ठ- 19
4. डॉ. अमरीश सिन्हा, बोगदे से बाहर, पृष्ठ - 250-251
5. वही, पृष्ठ- 252